IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''जनपद आजमगढ़ में फसल भूमि उपयोग एवं जनसंख्या क्रियाशीलता का प्रतिरूप तथा ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक पक्षों का भौगोलिक अध्ययन''

निर्देशक
डॉ0 अखिलेश तिवारी
असि0 प्रोफेसर (भूगोल विभाग)
श्री गॉधी स्नात्कोत्तर महाविद्यालय
मालटारी आजमगढ़ (उ0 प्र0)

शोधार्थी
अखिलेश कुमार गौतम
एम0 ए0, बी0 एड0
नेट (भूगोल)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में फसल भूमि उपयोग एवं जनसंख्या क्रियाशीलता का प्रतिरूप तथा ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक पक्षों का भौगोलिक अध्ययन है। ''जनपद आजमगढ़ का निर्माण 1665 ई0 में राजा हरिबंश सिंह के पौत्र नवाब आजमशाह के द्वारा बसाया हुआ नगर था जो तमसा (टौंस) नदी के बायें किनारे पर एक ऐतिहासिक नगर के रूप में जाना जाता है। टौंस नदी के पुनीत तट पर स्थित यह जनपद अनेक ऋषि–मुनियों , सन्तों, शिक्षाविद्, संगीतकार, शायरकार, फिल्मकारों की पावन पुण्यभूमि है। आदि काल से एकान्त एवं पवित्र स्थली पाकर ऋषि मुनियों ने अपनी साधना स्थल बनायी। महर्षि दुर्वासा, महर्षि दत्तात्रेय, महर्षि देवल, महर्षि चन्द्रमा, अवन्तिकापुर, भॅवरनाथ, भैरोनाथ, पलटू संत, गोविन्द साहब, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल इस जनपद में स्थित है।'' [1] अध्ययन क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश 25^0 28′ से 26^0 27′ उत्तरी अक्षांश तथा 82^0 41′ से 83^0 52′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जनपद का कुल क्षेत्रफल4054 वर्ग किमी0 है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 4612134 है। जनपद का लिंगानुपात 1000/1019 है तथा जनसंख्या वृद्धि दर (15.82) प्रतिशत है। जनघनत्व 1138 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। जनपद की साक्षरता दर (72.92) प्रतिशत है । इस जनपद में तीव्र जनसंख्या वृद्धि एवं फसल भूमि उपयोग के बढ़ते प्रभाव के कारण ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक पक्षों को भौगोलिक अध्ययन का विश्लेषणात्मक पहलुओं का अध्ययन करके दोनों के मध्य बढ़ते प्रभावों के सन्तुलन हेतु सुझाव प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रस्तावना :–

शोध अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में फसल भूमि उपयोग एवं जनसंख्या क्रियाशीलता के सम्बन्ध में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक कारकों का विश्लेषणात्मक है। जनपद आजमगढ़ की भूमि समतल, उर्वर उपजाऊ है। '' प्रकृति ने विविध क्षेत्र में मानव विकास के मिट्टी सम्भावनाओं के लिए जलवायु को मौलिक रूप में प्रदान किया है। इस दृष्टिकोण से प्राकृतिक संसाधनों में भूमि सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। न केवल क्षेत्रीय जनसंख्या को भोजन देती है बल्कि मानव विकास के सभी कार्यों भूमि,

जलवनस्पति हेतु आधार प्रदान करती है। इसलिए भूमि एक आधारभूत प्राकृतिक संसाधन है , जिसपर मानव आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यों का प्रभुसम्पन्न होत है।'' [2] फसल भूमि उपयोग का विभिन्न फसलों के क्षेत्रीय वितरण उत्पादन प्रतिरूप को प्रस्तुत करते है। जनपद आजमगढ़ में जनसंख्या क्रियाशीलता के अन्तर्गत, जनसंख्या वृद्धि, जनघनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, जन्मदर एवं मृत्यु दर के द्वारा जनसंख्या संघटक के तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

इस जनपद में फसल भूमि उपयोग का प्रतिरूप एक समान नहीं पाया जाता है, क्योंकि जनपद का उत्तरी भाग बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है तथा दक्षिणी भाग उसरैली अनुपजाऊ भूमि है तथा मध्यवर्ती भाग में कृषि फसल उत्पादन के लिए उपजाऊ मिट्टी पायी जाती है। ठीक उसी प्रकार जनसंख्या की क्रियाशीलता मध्यवर्ती भाग में अधिक है। शोधार्थी के द्वारा अध्ययन क्षेत्र में फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत गेहूँ, चावल, मक्का, दलहन, तिलहन, गन्ना के फसल वितरण का अध्ययन किया गया है तथा ग्रामीण विकास हेतु आर्थिक, सामाजिक पक्षों के द्वारा ग्रामीण जनसंख्या के उन्नति के लिए ग्रामीण विकास रोजगार कार्यों के द्वारा स्वरोजगार परक बनाने के भारत के द्वारा जनसंख्या नियंत्रण एवं फसल भूमि उपयोग के नियंत्रण के दीर्घकालीन योजनाओं के माध्यम से समन्वित ग्रामीण विकास हेतु योजनाओं के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में फसल भूमि उपयोग का प्रतिरूप :–

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत फसल भूमि उपयोग के द्वारा जनपद में कुल फसल भूमि 473655 हे0 भूमि फसल भूमि उपयोग के अन्तर्गत प्रयोग में लायी जाती है। जो ग्रामीण क्षेत्रों में 472212 हे0 भूमि का उपयोग किया जाता है तथा नगरीय क्षेत्रों में 1143 हे0 भूमि का उपयोग वितरण के अन्तर्गत किया जाता है जो सारणी संख्या 1.1 द्वारा स्पष्ट किया जाता है। सांख्यिकीय पत्रिका 2017–18 के अन्तर्गत फसल भूमि उपयोग के अन्तर्गत दर्शाया गया है। इस जनपद में फसल भूमि उपयोग प्रतिरूप के अन्तर्गत 2017–18 में शुद्ध बोया गया क्षे0 छः फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत 473655 हे0 भूमि का उपयोग किया जाता है। शोधार्थी के द्वारा शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में मार्टीनगंज 28897 हे0 भूमि फसल भूमि उपयोग के प्रखण्ड हैं तथा न्यूनतम फसल भूमि उपयोग के प्रखण्ड –पल्हनी प्रखण्ड सबसे न्यूनतम स्तर पर फसल भूमि उपयोग के विकासखण्ड है। ऐसा इसलिए नगरीय क्षेत्रों में फसल भूमि उपयोग का क्षेत्रफल न्यूनतम होता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में फसल भूमि उपयोग का क्षेत्र अधिक होता है।

इस जनपद में फसल भूमि प्रतिरूप गेहूँ का जनपद में कुल उत्पादक क्षेत्रफल 229030 हे0 भूमि है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 228459 हे0 भूमि तथा नगरीय क्षेत्रों में 1143 हे0 भूमि तथा नगरीय क्षेत्रों में 1143 हे0 भूमि है। गेहूँ फसल भूमि के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में मार्टीनगंज 121482 हे0 भूमि के प्रखण्ड पाये जाते है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्डों में अतरौलिया 5797 हे0 भूमि के प्रखण्ड पाये जाते है। चावल

सारणी सं0 1.1
जनपद आजमगढ़ में फसल प्रतिरूप का वितरण –(2017–18) हे0 में

क्र0 सं0	विकासखण्ड का नाम	कुल शुद्ध बोया गया क्षे0	गेहूँ	चावल	दलहन	तिलहन	मक्का	गन्ना
1	अतरौलिया	13818	5797	7100	695	92	0	134
2	कोयलसा	15755	5812	8310	589	94	94	856
3	अहिरौला	20798	8793	9914	897	169	345	680
4	महाराजगंज	23689	12135	9452	682	26	149	1245
5	हरैया	28552	12887	9730	650	156	56	4773
6	बिलरियागंज	24021	11626	10783	787	57	12	756
7	अजमतगढ़	23942	12243	9963	761	145	74	965
8	तहबरपुर	18907	9387	7132	1301	42	35	1010
9	मिर्जापुर	14869	6804	5321	789	132	556	1581
10	मोहम्मदपुर	21296	10158	9732	619	120	242	453
11	रानी की सराय	14227	7204	6544	754	15	214	583
12	पल्हनी	11878	6006	4595	675	0	127	514
13	सठियांव	18703	9250	8252	514	10	88	1519
14	जहानागंज	22059	10940	9902	506	57	63	731
15	पवई	24448	11836	11287	897	236	537	910
16	फूलपुर	21637	10188	8530	994	159	1185	581
17	मार्टिनगंज	28897	14482	12117	914	205	598	589
18	ठेकमा	28811	14373	12475	857	21	572	513
19	लालगंज	28288	14133	12641	670	72	360	412
20	मेंहनगर	25363	12204	11908	574	92	67	518
21	तरवा	27893	13437	12791	584	168	436	777
22	पल्हना	17889	8764	8275	396	81	69	304
	ग्रामीण योग	**472212**	**128459**	**199414**	**16505**	**2149**	**5581**	**20104**
	नगरीय योग	**1143**	**571**	**550**	**0**	**0**	**22**	**0**
	जनपद योग	**473655**	**229038**	**199964**	**16505**	**2149**	**5903**	**20104**

स्रोत :– जनपद सांख्यिकीय पत्रिका आजमगढ़ 2019 तालिका सं0 19

फसल प्रतिरूप के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में तरवां 12791 हे0 भूमि है तथा न्यूनतम स्तर चावल उत्पादक के प्रखण्डों में पल्हनी 4595 हे0 भूमि के प्रखण्ड पाये जाते हैं। दलहन फसल प्रतिरूप के अन्तर्गत उच्च स्तर के दलदल फसल उत्पादक क्षेत्र के प्रखण्डों में तहबरपुर 1301 हे0 भूमि के प्रखण्ड हैं तथा न्यूनतम स्तर पर दलहन फसल उत्पादक क्षेत्र के प्रखण्डों में पल्हना 396 हे0 भूमि के प्रखण्ड है। इसी प्रकार तिलहन फसल प्रतिरूप के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में पवई 236 हे0 भूमि के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर तिलहन फसल प्रतिरूप के प्रखण्डों में पल्हनी 0 हे0 भूमि पर तिलहन फसल के प्रखण्ड पाये जाते है । मक्का फसल प्रतिरूप के उच्च स्तर के प्रखण्ड फूलपुर 1185 हे0 प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर पर मक्का उत्पादक फसल के प्रखण्डों में अतरौलिया 0 हे0 भूमि पर मक्का का उत्पादन किया जाता है इस जनपद में गनना उत्पादक के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में हरैया 4773 हे0 भूमि है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्डों में अतरौलिया 84 हे0 भूमि के प्रखण्ड पाये जाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में जनपद क्रियाशील का अध्ययन :–

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ के अन्तर्गत जनसंख्या क्रियाशलता का अध्ययन जनसंख्या के संघटन कारकों के द्वारा निर्धारित किया जाता है जैसे जनसंख्या संरचना, जनवृद्धि, लिंगानुपात, जनघनत्व, साक्षरता, जन्मदर, मृत्युदर, के द्वारा दर्शाया जाता है। '' जनसंख्या संघटक के विभिन्न अवयवों में जनसंख्या भूवेत्ताओं के लिए लिंग संघटन , आयु संरचना व आर्थिक संघटक का विशेष महत्व है। विभिन्न प्रकार की योजनाओं के लिए विविध जनसांख्यिकीय लक्षणों जैसे–जन्मता, मर्त्यता, प्रवास वैवाहिक लक्षण, आर्थिक लक्षण आदि विश्लेषण के स्त्रीपुरूष के ऑकड़े प्राप्त किये जाते है और जनसंख्या संरचना का निर्धारण होता है'' [4] '' ट्रिवार्या के अनुसार – किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिए दोनों लिंगों का अनुपात आधारभूत है क्योंकि यह न केवल स्थलरूप का एक महत्वपूर्ण लक्षण है अपितु अन्य जनसांख्यिकीय तत्वों को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है और क्षेत्रीय विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।''[5] अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में जनसंख्या क्रियाशीलता के द्वारा जनसंख्या सम्बन्धी तत्वों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। जनसंख्या संघटक के विभिन्न अवयवों में जनपद की कुल जनसंख्या, स्त्री–पुरूष जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता के अन्तर्गत जनसंख्या क्रियाशीलता के पहलुओं का अध्ययन किया गया है जो सारणी संख्या 1.2 द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

इस जनपद में 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 4612134 है जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 4218733 है तथा नगरीय जनसंख्या 393401 है। इस जनपद में कुल पुरूषों की जनसंख्या 2284157 तथा महिलाओं की जनसंख्या 2327977 है तथा जनसंख्या वृद्धि जनपद में 15.82 प्रतिशत है तथा जनघनत्व 1138 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है तथा जनपद का लिंगानुपात 1000/1019 महिलाएँ है जनपद की साक्षरता दर 72.92 प्रतिशत है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में 22 विकासखण्डों के अन्तर्गत ऑकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

जनपद आजमगढ़ में कुल जनसंख्या के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में बिलरियागंज 252989, अजमतगढ़ 2163177, पवई 212099, मिर्जापुर 207389 ,फूलपुर 207205, सठियॉव 206311, अहिरौला 205398 के प्रखण्ड उच्चतम स्तर पर पाये जाते हैं तथा न्यूनतम जनसंख्या के प्रखण्डों में पल्हना 119611, अतरौलिया 128503 के प्रखण्ड है तथा शेष प्रखण्डों में सामान्य जनसंख्या के प्रखण्ड है। इस जनपद में पुरूषों की जनसंख्या के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में बिलरियागंज 1265629 है तथा न्यूनतम स्तर के पुरूषों की जनसंख्या के प्रखण्डों में पल्हना 53985 है तथा महिलाओं की जनसंख्या के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में–बिलरियागंज 126460 तथा न्यूनतम

सारणी सं0 1.2
जनपद आजमगढ़ में जनसंख्या कियाशीलता के संघटक –(2011) (6)

क0 सं0	विकासखण्ड का नाम	जनपद की कुल जनसंख्या	जनपद की पुरूष जनसंख्य	जनपद की महिला जनसंख्य	जनसंख्या वृद्धि	जनसंख्या घनत्व	लिंगानुपात	साक्षरता
1	अतरौलिया	128503	62864	65635	12.94	1631.04	1044	71.60
2	कोयलसा	182840	89893	93453	13.79	1317.70	1045	69.87
3	अहिरौला	205398	102363	103035	15.22	1269.58	1006	69.67
4	महाराजगंज	187473	92971	94502	16.56	1256.77	1016	64.78
5	हरैया	199561	49005	100556	16.13	1252.62	1015	67.83
6	बिलरियागंज	252989	126529	186460	20.29	1105.54	999	71.60
7	अजमतगढ़	216317	107183	109134	14.14	1083.71	1018	71.20
8	तहबरपुर	179291	87794	91417	15.45	1053.41	1041	69.47
9	मिर्जापुर	207383	101776	105607	17.84	1047.84	1037	74.09
10	मोहम्मदपुर	191597	93809	97788	15.40	1024.68	1042	73.09
11	रानी की सराय	183177	91220	91953	16.05	1016.74	1008	71.54
12	पल्हनी	204770	103371	99599	20.96	998.32	945	73.42
13	सठियांव	206311	104452	101859	11.12	996.81	975	67.29
14	जहानागंज	166973	83373	83600	9.07	951.73	1002	69.76
15	पवई	212099	105139	106960	18.85	908.29	1017	71.48
16	फूलपुर	207205	101490	105715	19.16	923.06	1041	71.33
17	मार्टिनगंज	194591	93387	101204	17.28	876.34	1083	68.51
18	ठेकमा	199524	96207	103317	14.15	873.93	1073	69.40
19	लालगंज	201996	92273	104693	12.80	837.49	1076	71.27
20	मेंहनगर	186592	91787	94806	18.76	780.94	1032	68.87
21	तरवा	192089	94485	97604	16.91	756.17	1033	70.27
22	पल्हना	1119611	53985	57976	10.49	1056.00	1073	69.69
	ग्रामीण योग	4218733	**2081860**	**2136873**	–	–	**1026**	**70.32**
	नगरीय योग	**393401**	**202297**	**191104**	–	–	**944**	**77.31**
	जनपद योग	**4612134**	**2284157**	**2327977**	**15.82**	**1138**	**1019**	**72.92**

स्रोत :– जनपद सांख्यिकीय पत्रिका आजमगढ़ 2019, तालिका सं0 6,7 व 3ब

न्यूनतम महिलाओं की जनसंख्या के विकासखण्ड पल्हना 57976 है। इस प्रकार जनसंख्या का आकलन अध्ययन क्षेत्र में किया गया है।

इस जनपद में जनसंख्या वृद्धि के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में पल्हनी 20.96 प्रतिशत उच्च स्तर के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर पर जनसंख्या वृद्धि के प्रखण्ड–जहानागंज 9.07 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि के प्रखण्ड है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि के उच्चतम एवं न्यूनतम स्तर अध्ययन किया गया है तथा शेष प्रखण्डों में सामान्य जनवृद्धि माना गया है। जनपद आजमगढ़ में जनसंख्या घनत्व के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में अतरौलिया 1610.39 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, कोयलसा 1317.70 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, अहिरौला 1249.58 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, महाराजगंज 1256.77 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, हरैया 1252.62 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 के प्रखण्ड हैं तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्डों में –पल्हना 756.17 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0, तरवां 780.94 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 के प्रखण्ड तथा शेष प्रखण्डों में सामान्यजन घनत्व पाया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में लिंगानुपात के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में मार्टीनगंज 1000/1083 तथा न्यूनतम स्तर के लिंगानुपात के प्रखण्डों में पल्हनी 1000/945 सबसे न्यूनतम स्तर पर लिंगानुपात के प्रखण्ड पाये जाते हैं तथा शेष प्रखण्डों मे सामान्य स्तर के दर के लिंगानुपात के प्रखण्ड है। इस जनपद में साक्षरता दर के उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में मिर्जापुर 74.09 प्रतिशत के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर के साक्षरता के प्रखण्ड महाराजगंज 64.78 प्रतिशत के प्रखण्ड न्यूनतम स्तर पर पाये जाते है। इस प्रकार शोधार्थी के द्वारा अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या क्रियाशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

जनपद आजमगढ़ में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक–आर्थिक पक्ष :–

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक आर्थिक बदलाव दोनो ही महत्वपूर्ण होते है–

‘‘ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में लोगों की बढ़ती हुई भागीदारी, योजनाओं का केन्द्रीकरण, भूमि सुधारों को बेहतर तरीके से लागू करना, ऋण आसानी से उपलब्ध कराकर लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का लक्ष्य होता है। ग्रामीण विकास के लिए कृषि, उद्योग, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य सम्बन्धित कारकों पर ध्यान दिया जाता है। भारत सरकार के द्वारा ग्रामीण विकास हेतु विभिन्न योजनाओं को क्रियाशीलता प्रदान की गयी है।‘‘

1. जनपद आजमगढ़ सहित सम्पूर्ण राष्ट्र में रोजगार देने के लिए महात्मा गांधी नेशनल रूरल एम्प्लावायमेन्ट गारण्टी एक्ट (मनरेगा) के द्वारा ग्रामीण विकास हेतु कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इस योजना के अन्तर्गत जनपद के सभी प्रखण्डों में पवई, फूलपुर, मार्टीनगंज, तरवां, बिलरियागंज, तहबरपुर, मिर्जापुर, पल्हना, पल्हनी, सठियांव,अतरौलिया, महाराजगंज, लालगंज, मेंहनगर, हरैया, अजमतगढ़, रानी की सराय, कोयलसा, जहानागंज, मोहम्मदपुर, ठेकमा,अहिरौला आदि प्रखण्डों ग्रामीण लोगों के विकास में यह योजना एक महत्वपूर्ण योजना है।
2. अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत स्वरोजगार और कौशल विकास के लिए नेशनल रूरल लाइलवी हूड मिशन (एन0आर0एल0एम0) के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के कौशल विकास के लिए कृषि उद्योग, तकनीकी शिक्षा, ज्ञान आदि रोजगार के विकास के लिए एक वरदान माना जाता है।
3. अध्ययन क्षेत्र आजमगढ़ जनपद के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को इण्दिरा गॉधी आवास योजना(आई0ए0वाई0) के द्वारा अच्छे भवन के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।
4. ग्रामीण विकास निर्माण हेतु प्रधानमंत्री सड़क योजना (पी0एम0जी0एस0वाई0) के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के साधनों का विकास करके ग्रामीण लोगों के जीवन शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार एवं कृषि के क्षेत्रों का संचार साधनों के माध्यम से किया जाता है।
5. अध्ययन क्षेत्रों में सामाजिक विकास हेतु के लिए नेशनल शोसल असिस्टेण्ट प्रोग्राम एक योजना है। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक कार्यों के उन्नति के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण स्वरोजगार को बढ़ावा है।
6. ग्रामीण विकास हेतु आदर्श ग्रामों के लिए संसद आदर्श ग्राम योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, विद्युत ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पेयजल, स्वास्थ्य सेवा, डेयरी उद्योग, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं रोजगार शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए यह योजना महत्वपूर्ण है।
7. ग्रामीण विकास केन्द्रों के लिए श्यामाप्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन ग्राम क्षेत्रों में संचार शिक्षा सूचना के निगरानी के लिए यह योजना एक महत्वपूर्ण है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में ‘‘ ग्रामीण विकास हेतु ग्राम वासियों की प्रकृति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। वह मनुष्य एवं प्रकृति मध्य अन्तर्क्रिया का स्वरूप अधिक घनिष्ठ होता है। कृषि पशुपालन आदि कोई प्राथमिक क्रिया ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार होती है। ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था पर उद्योगों का विकास हुआ है तथा ग्रामीण विकास से देश विकास की संकल्पना अध्ययन क्षेत्र में की जा सकती है।

आर्थिक, सामाजिक पक्ष ग्रामीण विकास के प्रमुख कारक होते है जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, मनोरंजन, उद्योग, कारखाने, पशुपालन, आखेट–शिकार करना, मत्स्य पालन करना, आदि ग्रामीण विकास के आयाम होते हैं जिसके विकास से ही अर्थव्यवस्था का विकास सम्भव होगा।''[8]

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ सहित सम्पूर्ण राष्ट्र में ग्रामीण विकास हेतु भारत सरकार के द्वारा सभी सामाजिक, आर्थिक पक्षों का विकास किया जा रहा है। ''वर्तमान समय में देश के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री कृषि विकास के लिए नलकूप वितरण सेवा, पम्पासेट वितरण, कृषि यन्त्रों के लिए ऋण योजना, पशुपालन समृद्ध योजना, सिंचाई के तकनीकी विकास योजना, जैविक उर्वरक योजना, संशोधित बीज वितरण एवं उर्वरक वितरण योजना तथा कीटनाशक रसायन योजना आदि के माध्यम से आर्थिक क्षेत्रों में कृषि अनुसन्धान के केन्द्र, मृदा परीक्षण केन्द्र, बीज शोध केन्द्र एवं कृषि महाविद्यालय कोटवा आजमगढ़ में विकास करके कृषि समृद्ध बनाने के लिए प्रधानमंत्री कृषि विकास योजना (समृद्ध विकास एवं खुशहाल विकास योजना) किसान फसल आपातकालीन बीमा का योजना, अध्ययन क्षेत्र में सहकारी बैंक, भूमि विकास बैंक , भूमि समिति सहकारी विपणन के तहत ग्रामीण विकास हेतु यह योजना आर्थिक क्षेत्रों में वरदान सिद्ध होगी।''

इस जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु सामाजिक पक्षों में स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार को बढ़ावा दिया जाता है। जनपद के सभी ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु सर्वशिक्षा अभियान के तहत ग्रामीण 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया गया है। वर्तमान में ग्रामीण विकास हेतु प्रधानमंत्री कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत सभी युवाओं को सभी क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण के तहत स्वरोजगार परक बनाने से जुलाई 2015 को ग्रामीण विकास हेतु यह योजना कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण वरदान सिद्ध होगी।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ के अन्तर्गत फसल प्रतिरूप एवं जनसंख्या कियाशीलता के सम्बन्ध में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक आर्थिक कारकों का विश्लेषण किया गया है। इस जनपद में कुल फसल प्रतिरूप हेतु भूमि 473655 हे0 भूमि है जिससे प्रमुख फसले– गेहूँ, चावल, मक्का, दलहन, तिलहन, गन्ना को सम्मिलित किया गया है तथा जनसंख्या कियाशीलता के अन्तर्गत जनपद की कुल जनसंख्या 4612134 है। इसके अन्तर्गत जनपद की कुल जनसंख्या संरचना–स्त्री–पुरूष, जनवृद्धि, जनघनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात के पहलुओं के अन्तर्गत पक्षों का अध्ययन किया गया है। जनपद में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक आर्थिक पक्षों का मूल्यांकन कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, आर्थिक व्यवसाय के अन्तर्गत विश्लेषण किया गया है। जनपद आजमगढ़ एक समतल भूभाग कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहॉ की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक कार्यों में लगी हुई हैं। यह जनपद प्राचीन (आदिकाल) से ऋषियों–मुनियों एवं सन्तों की पुण्य भूमि रही है। इस जनपद के मध्य भाग में तमसा(टौंस) नदी के द्वारा निर्मित उपजाऊ मैदान है। जनपद का उत्तरी क्षेत्र बाढ़ प्रभावित (घाघरा नदी), सरयू के द्वारा प्रभावित होता है तथा दक्षिणी भाग में ऊसरेली–कंकरीली मिट्टी का क्षेत्र है जो कृषि विकास हेतु अनुपयुक्त है। इस प्रकार शोधार्थी ने अपने अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक पक्षों का मूल्यांकन किया गया है। जनपद आजमगढ़ में तीव्र जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करके भूमि उपयोग के मध्य सन्तुलन एवं दीर्घकालीन भूमि उपयोग फसल को बनाये रखने की आवश्यकता होगी तथा ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक कारकों के अन्तर्गत शिक्षा और स्वास्थ्य तथा रोजगार की उत्तम व्यवस्था की जानी चाहिए तथा आर्थिक पक्षों में टिकाऊ कृषि पद्धति, पशुपालन, पेयजल की व्यवस्था, सिंचाई के साधन, विपणन बाजार, परिवहन, संचार आदि के क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है तथा जनपद में ग्रामीण विकास के लिए भारत सरकार की योजनाओं को लागू करके ग्रामीण विकास को समृद्ध एवं शक्तिशाली बनाया जा सकता है जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र का विकास सम्भव होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. डॉ0 विनोद त्रिपाठी : आजमगढ़ जनपद की पुरातत्व : 2004 हरदोई पब्लिकेशन–पृ0 सं0 42, 43।
2. डॉ0 आर0 सी0 तिवारी : कृषि भूगोल : 2010, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ सं0 77,78
3. सारणी सं0 1.1, जनपद सांख्यिकीय पत्रिका आजमगढ़ 2019, तालिका सं0 19
4. डॉ आर0 सी0 चान्दना : जनसंख्या भूगोल 2017, कल्याणी पब्लिकेशन्स लुधियाना पृष्ठ सं0 316
5. डॉ आर0 सी0 चान्दना : जनसंख्या भूगोल 2017, कल्याणी पब्लिकेशन्स लुधियाना पृष्ठ सं0 316
6. सारणी संख्या 1.2 जनपद सांख्यिकीय पत्रिका आजमगढ़ : 2019, तालिका सं0 6,7,33
7. ग्रामीण विकास पत्रिका 2014
8. डॉ0 एस0 डी0 मौर्य : अधिवास भूगोल : 2017 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ सं0 114
9. ग्रामीण विकास प्रक्रिया में सहकारिता योजना–2015
10. समाचार पत्र, लेख, जर्नल, व अन्य पुस्तकें